श्रीमदमरसिंहविरचितः

अमरकोषः

(मनुष्यवर्गः)

पण्डितवरश्रीमदमरसिंहविरचितः
अमरकोषः

अयम् अमरकोषः नामलिङ्गानुशासनं नाम्नापि प्रसिद्धम्। अस्य लेखकः पण्डितप्रवरः श्रीमद् अमरसिंहः विद्यते। अयं ग्रन्थः त्रिषु काण्डेषु विभक्तः। ग्रन्थकारः कुत्र जातः? कदा जातः? विषयेऽस्मिन् प्रामाणिकत्वेन न किमपि समुपलभ्यते। तथापि किम्वदन्त्यानुसारेण विक्रमादित्यस्य राजसभायां नवरत्नेषु कविरत्नः आसीत्।

धन्वन्तरि-क्षपणकामरसिंह-शङ्कु-
वेतालभट्ट-घटखर्पर-कालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां,
रत्नानि वै वररुचिर्नवविक्रमस्य।।

अतः अस्य कालः ईस्वीपूर्वा प्रथमा शताब्दी भवेत्। संस्कृतवाङ्मयमवगन्तुं कोषग्रन्थस्य महती आवश्यकता अनुभूयते।

वरिष्ठोपाध्याय-कक्षायाः पाठ्यक्रमे मनुष्यवर्गः निर्धारितोऽस्ति।

मनुष्य-वर्गः-

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः।
स्युः पुमांसः पञ्च जनाः पुरुषाः पूरुषा नरः।।

मनुष्यस्य एकादश नामानि-

१.मनुष्यः (पु.), २.मानुषः(पु.),३.मर्त्यः (पु.), ४.मनुजः (पु.),५. मानव(पु.), ६.नर (पु.) ७.पुमान् (पु.), ८.पञ्च जनः(पु.), ९. पुरुषः (पु.), १०. पूरुषः (पु.) , ११. ना (पु.)।

स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः।
प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा।।

स्त्रियः एकादश नामानि-

१. स्त्री (स्त्री.), २. योषित् (स्त्री.), ३. अबला (स्त्री.), ४. योषा (स्त्री.), ५. नारी(स्त्री.),६. सीमन्तिनी (स्त्री.), ७. वधूः (स्त्री.), ८. प्रतीपदर्शिनी(स्त्री.), ९. वामा(स्त्री.), १०. वनिता (स्त्री.), ११. महिला (स्त्री.)

विशेषास्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना।
प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी।।
सुन्दरी रमणी रामा कोपना सैव भामिनी।
वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी।।

विशेषस्त्रियः द्वादशनामानि-

१. अङ्गना (स्त्री.), २.भीरुः (स्त्री.), ३. कामिनी(स्त्री.), ४. वामलोचना (स्त्री.), ५. प्रमदा (स्त्री.), ६. मानिनी (स्त्री.), ७. कान्ता (स्त्री.), ८. ललना(स्त्री.), ९. नितम्बिनी(स्त्री.), १०.सुन्दरी (स्त्री.), ११. रमणी (स्त्री.), १२. रामा (स्त्री.)।

कोपनायाः स्त्रियः द्वे नामनी- १.कोपना (स्त्री.), २. भामिनी (स्त्री.)।

गुणवत्याः स्त्रियः चत्वारि नामानि- १. वरारोहा (स्त्री.), २. मत्तकाशिनि (स्त्री.), ३.उत्तमा (स्त्री.), ४. वरवर्णिनी(स्त्री.)।

कृताभिषेका महिषी भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः।

पत्नी पाणिगृहिती च द्वितीया सहधर्मिणी।।
भार्या जायाथ पुंभूम्नि दाराः स्यात्तु कुटुम्बिनी।
पुरन्ध्री सुचरिता तु सती साध्वी पतिव्रता।।

नृपस्त्रियः द्वे नामनी-

१. महिषी (स्त्री.), २. भोगिनी (स्त्री.)।

परिणीतास्त्रियः सप्त नामानि-

१.पत्नी (स्त्री.), २. पाणिगृहिती(स्त्री.), ३. द्वितीया (स्त्री.), ४. सहधर्मिणी(स्त्री.),५.भार्या (स्त्री.), ६. जाया (स्त्री.), ७.दाराः (पु. बहुवचनम्)

पुत्रादिमत्याः सधवायाः द्वे नामनी-

१. कुटुम्बिनी(स्त्री.), २. पुरन्ध्री (स्त्री.)।

पतिसेवातत्परायाः चत्वारि नामानि-

१. सुचरिता (स्त्री.), २. सती (स्त्री.), ३. साध्वी (स्त्री.), ४. पतिव्रता (स्त्री.)।

कृतसपत्निकाध्यूढधिविन्ना अथ स्वयंवरा।
पतिंवरा च वर्या च कुलस्त्री कुलपालिका।।

अनेकभार्यस्य स्त्रियः त्रीणि नामानि-

१. कृतसपत्निका(स्त्री.), २. अध्यूढा(स्त्री.), ३.अधिविन्ना(स्त्री.)।

स्वेच्छाकृतपतिवरणायाः स्त्रियः त्रीणि नामानि-

१. स्वयंवरा (स्त्री.),२.पतिंवरा (स्त्री.), ३. वर्या (स्त्री.)।

कुलरक्षायाः स्त्रियः द्वे नामनी -

१. कुलस्त्री (स्त्री.), २. कुलपालिका (स्त्री.)।

कन्या कुमारी ----तरुणी युवतिः समे।।

प्रथमवयस्क-कन्यायाः द्वे नामनी-

१. कन्या (स्त्री.), २. कुमारी (स्त्री.)।

प्रथमवयसि वर्तमानायाः कन्यायाः द्वे नामनी-

१. तरुणी (स्त्री.), २. युवतिः / युवती (स्त्री.)।

समाः स्नुषाजनीबध्यः चिरण्टी तु सुवासिनी।
इच्छावती कामुका स्यात् वृषस्यन्ती तु कामुकी।।

पुत्रभार्यायाः त्रीणि नामानि-

१. स्नुषा (स्त्री.), २. जनी (स्त्री.), ३.बधूः (स्त्री.)।

प्राप्तयौवन-पितृगेहस्थायाः द्वे नामनी-

१. चिरण्टी (स्त्री.), २. सुवासिनी (स्त्री.)।

धनादीच्छायुक्त-स्त्रियः द्वे नामनी-

१. इच्छावती (स्त्री.), २. कामुका (स्त्री.)।

कान्तार्थिनी तुया याति संकेतं साभिसारिका।
पुंश्चली धर्षणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी।।
स्वैरिणी पांशुला च स्यात् अशिश्वी शिशुना विना।

स्वैरिण्याः स्त्रियः अष्टौ नामानि–

१. पुंश्चली (स्त्री.), २. धर्षणी (स्त्री.), ३. बन्धकी (स्त्री.), ४. असती (स्त्री.), ५. कुलटा(स्त्री.), ६. इत्वरी (स्त्री.), ७. स्वैरिणी (स्त्री.), ८. पांशुला (स्त्री.)।

शिशुना विना स्त्रियः एकं नाम– १. अशिश्वी (स्त्री.)।

अवीरा निष्पतिसुता विश्वस्ता विधवे समे।

पतिपुत्ररहितायाः स्त्रियः एकं नाम– १. अवीरा (स्त्री.)।

विधवास्त्रियः द्वे नामनी – १. विश्वस्ता (स्त्री.), २. विधवा (स्त्री.)।

आलिः सखी वयस्या च पतिपत्नी सभर्तृका।
वृद्धा पलिक्नी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती।।

सख्याः त्रीणि नामानि– १. आलिः (स्त्री.), २. सखी(स्त्री.), ३. वयस्या (स्त्री.)।

जीवद्धर्तृकायाः द्वे नामनी– १. पतिपत्नी (स्त्री.), २. सभर्तृका(स्त्री.)।

वृद्धायाः द्वे नामनी– १. वृद्धा (स्त्री.), २. पलिक्नी (स्त्री.)।

विदुषी–स्त्रियः द्वे नामनी– १. प्राज्ञी (स्त्री.), २. प्रज्ञा / प्राज्ञा (स्त्री.)।

बुद्धिमत्याः स्त्रियः द्वे नामनी– १. प्राज्ञा (स्त्री.), २. धीमती (स्त्री.)।

शूद्री शूद्रस्य भार्या स्यात् शूद्रा तज्जातिरेव च ।
आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंयोगयोः समाः।।

शूद्रभायायाः एकं नाम– शूद्री (स्त्री.)।

शूद्रजातीयायाः स्त्रियः एकं नाम– शूद्रा (स्त्री.)।

आभीर्याः स्त्रियः द्वे नामनी– आभीरी(स्त्री.), २. महाशूद्री(स्त्री.)।

अर्याणी स्वयमर्या स्यात् क्षत्त्रिया क्षत्त्रियाण्यपि।
उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्यापि च स्वतः।।

वैश्यजातीयाः स्त्रियः द्वे नामनी– १.अर्याणी (स्त्री.) २. अर्या (स्त्री.)।

क्षत्त्रियजातीयायाः स्त्रियः द्वे नामनी– १. क्षत्त्रिया (स्त्री.), २. क्षत्त्रियाणी(स्त्री.)।

स्वयं विद्योपदेशिन्याः स्त्रियः द्वे नामनी– १. उपाध्याया (स्त्री.), २. उपाध्यायी (स्त्री.)।

या स्वयं मन्त्रव्याख्यानं करोति, तस्याः स्त्रियः एकं नाम– १. आचार्या (स्त्री.)।

आचार्यानी तु पुंयोगे स्यादर्यी क्षत्त्रियी तथा।
उपाध्यान्युपाध्यायी देष्ट्भार्यायाः पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा।।

आचार्यस्य स्त्रियः एकं नाम– १. आचार्यानी (स्त्री.)।

वैश्यपत्न्याः एकं नाम– १. अर्यी (स्त्री.)।

क्षत्त्रीयपत्न्याः नाम–१. क्षत्त्रियी (स्त्री.)।

विद्योपदेशकर्तुः स्त्रियः द्वे नामनी– १. उपाध्यानी (स्त्री.) २. उपाध्यायी (स्त्री.)।

स्त्रीपुंसयोः एकं लक्षणम्– १. पोटा (स्त्री.)।

वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसूः।
जातपत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका।।

वीरस्य भार्यायाः द्वे नामनी–

१. वीरपत्नी (स्त्री.), २. वीरभार्या (स्त्री.)।

वीरस्य मातुः द्वे नामनी–

१. वीरमाता (स्त्री.), २. वीरसूः(स्त्री.)।

प्रसूतास्त्रियः चत्वारि नामानि–

१. जातपत्या (स्त्री.),२. प्रजाता (स्त्री.),३. प्रसूता (स्त्री.),४. प्रसूतिका (स्त्री.)।

दूतिसंचारिके समे।।

दूत्याः द्वे नामनी– १. दूती (स्त्री.), २. संचारिका (स्त्री.)।

वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा अथ सा जनैः।

सत्कृता वारमुख्या स्यात् ---------।।

चत्वारि वेश्यायाः नामानि –

१. वारस्त्री (स्त्री.), २. गणिका (स्त्री.), ३. वेश्या (स्त्री.), ४. रूपाजीवा (स्त्री.)।

सत्कृतवेश्यायाः एकं नाम–

१. वारमुख्या(स्त्री.)।

विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञा अथ रजस्वला।

स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि।।

ऋतुमत्यप्युदक्यापि-------------।।

लक्षणादिना शुभाशुभे जानत्याः दैवज्ञा स्त्रियः द्वे नामनी –

१. विप्रश्निका (स्त्री.), २. ईक्षणिका (स्त्री.)।

ऋतुमतीस्त्रियः अष्टौ नामानि–

१. रजस्वला (स्त्री.), २. स्त्रीधर्मिणी (स्त्री.), ३. अविः (स्त्री.), ४. आत्रेयी (स्त्री.), ५. मलिनी (स्त्री.), ६. पुष्पवती(स्त्री.), ७. ऋतुमती (स्त्री.), ८. उदकी(स्त्री.)।

पैतृष्वसेयः स्यात् पैतृष्वस्रीयश्च पितृष्वसुः।

सुतो मातृष्वसुश्चैवं वैमात्रेयो विमातृजः।।

पितृष्वसुः पुत्रस्य द्वे नामनी– १. पैतृष्वसेयः (पु.), २. पैतृष्वस्रीयः (पु.)। ()

मातृष्वसुः सुतस्य द्वे नामनी– १. मातृष्वसेयः (पु.), २. मातृष्वस्रीयः (पु.)।

विमातुः पुत्रस्य द्वे नामनी– १.वैमात्रेयः (पु.), २. विमातृजः(पु.)।

अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः।

कौलटेयः कौलटेरः ।।

कुलटायाः पुत्रस्य पञ्च नामानि– १. बान्धकिनेयः (पु.), २. बन्धुलः (पु.), ३. असतीसुतः (पु.), ४. कौलटेयः(पु.), ५. कौलटेरः (पु.)।

आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः स्त्रियां त्वमी।

आहुर्दुहितरं सर्वेऽपत्यं तोकं तयोः समे।

स्वजाते त्वौरसोरस्यौ तातस्तु जनकः पिता।।

पुत्रस्य पञ्च नामानि–

१. आत्मजः (पु.), २. तनयः (पु.), ३. सूनुः (पु.), ४. सुतः (पु.), ५. पुत्रः (पु.)।

पुत्र्याः षड् नामानि–

१. दुहिता(स्त्री.), २. आत्मजा (स्त्री.), ३. तनया(स्त्री.),४.सूनुः (स्त्री.),५. सुता (स्त्री.),६.पुत्री

(स्त्री.)।

सन्तानस्य द्वे नामनी–

१. अपत्यम् (नपु.), २. तोकम् (नपु.)।

स्वस्माज्जातस्य पुत्रस्य द्वे नामनी–

१. औरसः (पु.), २. उरसः (पु.)।

पितुः त्रीणि नामानि–

१. तातः (पु.), २. जनकः (पु.), ३. पिता(पु.)।

जनयित्री प्रसूर्माता जननी भगिनी स्वसा।
ननन्दा तु स्वसा पत्युः नप्त्री पौत्री सुतात्मजा।।

मातुः चत्वारि नामानि–

१. जनयित्री (स्त्री.), २. प्रसूः (स्त्री.), ३. माता (स्त्री.), ४. जननी (स्त्री.)।

भगिन्याः द्वे नामनी–

१. भगिनी (स्त्री.), २. स्वसा (स्त्री.)।

पत्युः भगिन्याः एकं नाम– १. ननन्दा (स्त्री.)।

सुतस्य सुतायाः वा पुत्र्याः त्रीणि नामानि–

१. नप्त्री (स्त्री.), २. पौत्री (स्त्री.), ३. सुतात्मजा (स्त्री.)।

भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरस्युः परस्परम्।
प्रजावती भ्रातृजाया मातुलानी तु मातुली।।
पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः श्वशुरस्तु पिता तयोः।
पितुर्भ्राता पितृव्यः स्यात् मातुर्भ्राता तु मातुलः।।
श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः स्वामिनो देवृदेवरौ।
स्वस्रीयो भागिनेयः स्यात् जामाता दुहितुः पतिः।।
पितामहः पितुःपिता तत्पिता प्रपितामहः।
मातुर्मातामहाद्येवं सपिण्डास्तु सनाभयः।।

परस्परं भ्रातृभार्याणाम् एकं नाम– १. याता (स्त्री.)।

भ्रातुः पत्न्याः द्वे नामनी– १. प्रजावती(स्त्री.), २. भ्रातृजाया (स्त्री.)।

मातुलभार्यायाः द्वे नामनी– १. मातुलानी (स्त्री.), २. मातुली (स्त्री.)।

पतिपत्न्योः मातुः एकं नाम– १. श्वश्रूः (स्त्री.)।

पत्युः पत्न्याः वा पितुः नाम– १. श्वशुरः(पु.)।

पितुःभ्रातुः एकं नाम– १. पितृव्यः (पु.)।

मातुः भ्रातुः एकं नाम– १. मातुलः(पु.)।

पत्न्याः भ्रातुः एकं नाम– १. श्यालः (पु.)।

पत्युः कनिष्ठभ्रातुः द्वे नामनी– १. देवा (देवृ.पु.), २. देवरः (पु.)।

भगिन्याः पुत्रस्य द्वे नामनी– १.स्वस्रीयः(पु.), २. भागिनेयः (पु.)।

दुहितुः पत्युः एकं नाम– १. जामाता(पु.)।

पितुः पितुः द्वे नामनी– १. पितामहः (पु.), पितुःपिता (पु.)।

पितामहस्य पितुः एकं नाम– प्रपितामहः (पु.)।

मातुः पितुः एकं नाम– १. मातामहः (पु.)।

मातामहस्य पितुः एकं नाम– प्रमातामहः(पु.)।

सप्तपुरुषावधिज्ञातिनां द्वे नामनी– १. सपिण्डः(पु.), २. सनाभिः (पु.)।

समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः।

सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः।।

एकादरोत्पन्नभ्रातुः चत्वारि नामानि–

१. समानोदर्यः (पु.), २. सोदर्यः (पु.), ३. सगर्भ्यः (पु.), ४. सहजः (पु.)।

(एकादरोत्पन्नभगिन्याः चत्वारि नामानि– १. समानोदर्या(स्त्री.), २. सोदर्या (स्त्री.), ३. सगर्भ्या (स्त्री.), ४. सहजा (स्त्री.))।

सगोत्रस्य (बिरादरी इति भाषायाम्) जनानां षण्णामानि–

१. सगोत्रः (पु.), २. बान्धवः (पु.), ३. ज्ञातिः (पु.), ४. बन्धुः (पु.), ५. स्वः (पु.), ६. स्वजनः (पु.)।

धवः प्रियः पतिर्भर्ता---------।

पत्युः चत्वारि नामानि– १. धवः (पु.), २. प्रियः (पु.), ३. पति : (पु.),४. भर्ता (पु.)।

जारस्तूपपतिः समौ।

मुख्यादन्यस्य पत्युः द्वे नामनी– १.जारः(पु.), २. उपपतिः (पु.)।

अमृते जारजः कुण्डः।

जिवति पत्यौ जारजातस्य एकं नाम– १. कुण्डः (पु.),

मृते भर्तरि गोलकः।

विधवायां जारजातस्य एकं नाम– १. गोलकः (पु.)।

भ्रात्रीयो भ्रातृजः ।

भ्रातृपुत्रस्य द्वे नामनी– १. भ्रात्रीयः (पु.), २. भ्रातृजः (पु.)।

भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरावुभौ।

भ्रातृ–भगिन्योः द्वे नामनी– १. भ्राता (पु.), २. भगिनी (स्त्री.)।

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ।

मातापित्रोः त्रीणि नामानि– १. मातापितरौ (पु.) २. पितरौ (पु.)३. मातरपितरौ(पु.)।

श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ।

सहक्तयोः श्वश्रूश्वशुरयोः द्वे नामनी– १. श्वश्रूश्वशुरौ (पु.), २. श्वशुरौ (पु.)।

पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च।

पुत्र–कन्ययोः एकं नाम– १. पुत्रौ (पु.)।

दंपती जंपती जायापती भार्यापती च तौ।

पत्नीपत्योः चत्वारि नामानि– १. दंपती (पु.), २. जंपती (पु.), ३. जायापती (पु.), ४. भार्यापती(पु.)।

गर्भाशयो जरायुः स्यात्।

गर्भवेष्ठनचर्मणः द्वे नामनी– १. गर्भाशयः (पु.), २. जरायुः (पु.)।

गर्भो भ्रूण इमौ समौ।

कुक्षिस्थगर्भस्य द्वे नामनी– १. गर्भः (पु.), २. भ्रूणः (पु.)।

तृतीया प्रकृतिः शण्ढः क्लीवः पण्डो नपुंसकम्।

नपुंसकस्य पञ्च नामानि–

१. तृतीयप्रकृतिः (स्त्री.), २. शण्ढः (पु.), ३. क्लीवः (पु.), ४. पण्डः ५. नपुंसकम् (नपु.) ।

शिशुत्वं शैशवं बाल्यम्।

बाल्यत्वे त्रीणि नामानि– १. शिशुत्वम् (नपु.), २. शैशवम् (नपु.), ३. बाल्यम् (नपु.)।

तारुण्यं यौवनं समे।

तारुण्यस्य द्वे नामनी– १. तारुण्यम् (नपु.), २. यौवनम्(नपु.)।

स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वम्।

वृद्धत्वस्य द्वे नामनी– १.स्थाविरम् (नपु.), २. वृद्धत्वम् (नपु.)।

वृद्धसंघेऽपि वार्धकम्।

वृद्धसमूहस्य द्वे नामनी– १.वृद्धसंघः(पु.), २. वार्धकम् (नपु.),।

बालस्तु स्यान्माणवकः।

बालस्य द्वे नामनी– १. बालः (पु.),२.माणवकः(पु.)।

वयस्थस्तरुणो युवा।

यूनः त्रीणि नामानि– १. वयस्थः (पु.), २. तरुणः (पु.), ३. युवा (पु.)।

प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि। ४२।।

वृद्धस्य षण्णामानि–

१. प्रवयः (पु.), २. स्थविरः(पु.), ३. वृद्धः(पु.), ४.जीनः(पु.), ५. जीर्णः(पु.), ६. जरा (पु.),।

वर्षीयान्दशमी ज्यायान्।

अतिवृद्धस्य त्रीणि नामानि– १. वर्षीयान् (पु.), २. दशमी (पु.), ३. ज्यायान् (पु.),।

पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः।

ज्येष्ठभ्रातुः त्रीणि नामानि– १. पूर्वजः(पु.), २. त्वग्रियः (पु.), ३. अग्रजः (पु.)।

जघन्येजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः।

कनिष्ठभ्रातुः पञ्च नामानि–

१.जघन्येजे (पु.), २. कनिष्ठः (पु.), ३. यवीयः(पु.), ४. अवरजः (पु.),५. अनुजः(पु.)।

अमांसो दुर्वलश्छातः।

निर्वलस्य त्रीणि नामानि– १. अमांसः (पु.), २. दुर्वलः (पु.), ३. छातः (पु.)।

बलवान्मासंलोंऽसलः।

बलवतः त्रीणि नामानि–१. बलवान् (पु.), २. मासंलों (पु.), ३. असलः (पु.), ।

तुन्दिलस्तुन्दिकस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचिण्डिलः।

स्थूलोदरस्य पञ्च नामानि–

१. तुन्दिलः (पु.), २. तुन्दिकः (पु.), ३. तुन्दी (पु.), ४. बृहत्कुक्षिः (पु.), ५. पिचिण्डिलः (पु.)।

अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके।

चिपिटनासस्य त्रीणि नामानि–

१. अवटीटः(पु.)/ अवटीटा (स्त्री.)/अवटीटम् (नपु.) २.अवनाटः (पु.) /अवनाटा (स्त्री.)/अवनाटम्

(नपु.) ३.अवभ्रटः (पु.)/अवभ्रटा (स्त्री.)/अवभ्रटम् (नपु.)।

केशवः केशिकः केशी।

प्रशस्तकेशस्य त्रीणि नामानि- १. केशवः(पु.)२. केशिकः(पु.)३. केशी(पु.)।

बलिनो बलिभः समौ।

श्लथचर्मवतः द्वे नामनी- १.बलिनः (पु.),२.बलिभः (पु.)।

विकलाङ्गस्तु पोगण्डः।

स्वभावन्यूनाधिकाङ्गस्य द्वे नामनी- १. विकलाङ्गः(पु.) २. पोगण्डः(पु.)।

खर्वो ह्रस्वश्च वामनः।

वामनस्य त्रीणि नामानि- १.खर्वः (पु.), २. ह्रस्वः (पु.), ३. वामनः(पु.)।

स्यादेडे बधिरः।

श्रवणशक्तिहीनस्य द्वे नामनी- १. एडः(पु.), २. बधिरः(पु.)।

कुब्जे गडुलः।

कुब्जस्य द्वे नामनी- १. कुब्जः (पु.), २. गडुलः(पु.)।

कुकरे कुणिः।

रोगादिना वक्रकरस्य द्वे नामनी- १. कुकरः (पु.),२. कुणिः (पु.)।

पृश्निरल्पतनौ श्रोणः पङ्गौ मुण्डस्तु मुण्डिते।

अल्पशरीरस्य द्वे नामनी- १. पृश्निः(पु.), २. अल्पतनुः(पु.)।

जङ्घाहीनस्य द्वे नामनी- १. श्रोणः (पु.), २. पङ्गुः(पु.),।

खण्डितकेशस्य द्वे नामनी- १. मुण्डः (पु.), २. मुण्डितः(पु.)।

भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि।

औषधस्य पञ्च नामानि-१.भेषजः(पु.)२.औषधम्(नपु.),३.भैषज्यम् (नपु.)४.गदः(पु.)५.जायुः (पु.)।

स्त्री रुग्रुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः।

रोगस्य सप्त नामानि- १. रुक् (स्त्री.), २.रुजा (स्त्री.), ३. उपतापः(पु.), ४. रोगः(पु.),
५.व्याधिः(पु.), ६. गद (पु.), ७. आमयः(पु.)।

क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च प्रतिश्यायस्तु पीनसः।

स्त्री क्षुत् क्षुतं क्षवः पुंसि कासस्तु क्षवथुः पुमान्।

शोफस्तु श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका।

राजयक्ष्मणः त्रीणि नामानि- १. क्षयः (पु.), २. शोषः(पु.), ३. यक्ष्मा (पु.)।

नासारोगस्य द्वे नामनी- १. प्रतिश्यायः (पु.),२.पीनसः (पु.)।

छिक्कायाः त्रीणि नामानि- १. क्षुत् (स्त्री.), २. क्षुतम् (नपु.), ३. क्षवः (पु.)।

काशरोगस्य द्वे नामनी- १. कासः (पु.), २. क्षवथुः (पु.)।

शोथस्य त्रीणि नामानि- १. शोफः (पु.), २.श्वयथुः(पु.), ३. शोथः(पु.)।

पादस्फोटस्य द्वे नामनी- १. पादस्फोटः (पु.), २. विपादिका(स्त्री.), ।

कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया।

गात्रविर्घषणस्य (खूजुली इति भाषायां)**त्रीणि नामानि**-१. कण्डूः(स्त्री.)२. खर्जूः(स्त्री.), ३. कण्डूया (स्त्री.),।

प्रच्छार्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः।

वमनस्य त्रीणि नामानि– १. प्रच्छार्दिका (स्त्री.), २. वमि: (स्त्री.),३. वमथु: (पु.)।

वार्तो निरामयः कल्प उल्लाघो निर्गतो गदात्।

रोगनिर्मुक्तस्य चत्वारि नामानि– १. वार्तः(पु.), २.निरामयः(पु.), ३.कल्पः (पु.), ४.उल्लाघः(पु.)।

आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः। आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः----।

रोगिणः सप्त नामानि–

१. आमयावी(पु.), २.विकृतः (पु.), ३. व्याधितः (पु.),४. अपटुः (पु.), ५. आतुरः (पु.), ६.अभ्यमितः (पु.), ७.अभ्यान्तः (पु.)।

वातकी वातरोगी स्यात्।

वातरोगिणः द्वे नामनी– १. वातकी (पु.), २.वातरोगी (पु.)।

श्लेष्मलः श लेष्मणः कफी।

कफवतः त्रीणि नामानि– १. श्लेष्मलः (पु.), २.श्लेष्मणः(पु.), ३.कफी (पु.)।

शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च।

रेतसः षण्णामानि– १. शुक्रं (नपु.) २.तेजः (नपु.) ३.रेतः (नपु.) ४.बीजम् (नपु.) ५.वीर्यम् (नपु.) ६ इन्द्रियम्।

पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमामिषम्।

मांसस्य षण्णामानि– १. पिशितम् (नपु.), २.तरसम् (नपु.),३.मांसम् (नपु.),४. पललम् (नपु.),५.क्रव्यम् (नपु.),६. आमिषम्(नपु.),।

रुधिरेऽसृग्लोहितास्त्ररक्तक्षतजश्रोणितम्।

रक्तस्य सप्त नामानि–

१.रुधिरम् (नपु.),२.असृग् (नपु.),३.लोहितम् (नपु.),४.अस्त्रम्, (नपु.),५.रक्तम्, (नपु.),६. क्षतजम् (नपु.), ७. श्रोणितम् (नपु.)।

नाडी तु धमनिः सिरा।

धमन्याः त्रीणि नामानि– १.नाडी (स्त्री.), २. धमनिः(स्त्री.), ३. सिरा(स्त्री.)।

मस्तिष्कं गोर्दम्।

मस्तकमवस्नेहस्य द्वे नामनी– १.मस्तिष्कम् (नपु.), २. गोर्दम्(नपु.)।

अन्त्रं पुरीतत् गुल्मस्तु प्लीहा पुंसि।

आन्त इत्यस्य द्वे नामनी– १.अन्त्रम् (नपु.), २.पुरीतत् (नपु.)।

कुक्षिवामपार्श्वस्थ-मांसखण्डस्य द्वे नामनी– **१.**गुल्मः (पु.), २.प्लीहा (पु.)।

कालखण्डयकृती तु समे इमे ।

कुक्षिदक्षिणपार्श्वस्थ-मांसखण्डस्य (कलेजा) **द्वे नामनी**– १. कालखण्डम् (नपु.), २.यकृतम् (नपु.),।

सृणिका स्यन्दिनी लाला, दूषिका नेत्रयोर्मलम्। मूत्रं प्रस्रावः, उच्चारावस्करी शमलं शकृत्।

गूथं पुरीषं वर्चस्कमस्त्री विष्ठाविषौ स्त्रियौ।

लाला इत्यस्य त्रीणि नामानि– १. सृणिका (स्त्री.), २. स्यन्दिनी (स्त्री.), ३. लाला (स्त्री.)।

नेत्रयोर्मलम् एकम् – १. दूषिका (स्त्री.)।

मूत्रस्य द्वे नामनी– १. मूत्रम् (नपु.)२. प्रस्रावः (पु.)।

मलस्य नव नामानि–

१. उच्चारः (पु.), २. अवस्करी (स्त्री.), ३. शमलम् (नपु.), ४. शकृत्(नपु.), ५. गूथम् (नपु.), ६. पुरीषम् (नपु.), ७. वर्चस्कम् (नपु.), ८.विष्ठा (स्त्री.), ९. विषः (पु.)।

स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री, कीकसं कुल्यमस्थि च।

शिरोस्थिखण्डस्य द्वे नामनी– १. कर्परः (पु.), २.कपालः(पु.)।

अस्थिमात्रस्य त्रीणि नामानि– १. कीकसम् (नपु.),२. कुल्यम् (नपु.),३.अस्थि(नपु.)।

शिरोस्थनि करोटिः स्त्री, पार्श्वस्थनि तु पर्शुका।

मस्तकास्थ्नः द्वे नामनी– १. शिरोस्थनि(स्त्री.), २.करोटिः(स्त्री.)।

पार्श्वास्थ्नः एकं नाम–१.पर्शुका(स्त्री.)।

अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनः।

देहावयवस्य नामानि चत्वारि–१. अङ्गम् (नपु.)२. प्रतीकः (पु.)३. अवयवः (पु.)४. अपघनः (पु.)।

अथ कलेवरम्। गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः।

कायो देहः क्लीवपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः।

देहस्य एकादश नामानि–

१.कलेवरम् (नपु.), २. गात्रम् (नपु.), ३. वपुः(नपु.), ४. संहननम् (नपु.), ५. शरीरम्(नपु.), ६. वर्ष्म (नपु.), ७. विग्रहः(पु.), ८. कायः (पु.), ९. देहः (पु.), १०. मूर्तिः(स्त्री.)११. तनुः / तनूः (स्त्री.)।

पादाग्रं प्रपदं, पादः पदं घ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम्।

पादाग्रस्य द्वे नामानि– १. पादाग्रम् (नपु.),२. प्रपदम् (नपु.)।

चरणस्य चत्वारि नामानि– १. पादः (पु.), २. पदम् (नपु.), ३. घ्रिः(पु.), ४. चरणम् (नपु.)।

तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ, पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः।

पादग्रन्थ्योः द्वे नामनी– १. घुटिका (स्त्री.), २.गुल्फः (पु.)।

पादपश्चाद्भागस्य एकं नाम– १. पार्ष्णिः (पु.)।

जङ्घा तु प्रसृता, जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम्।

जङ्घायाः द्वे नामनी– १. जङ्घा (स्त्री.), २. प्रसृता (स्त्री.)।

जानूरुसन्धेः त्रीणि नामानि– १.जानुः(नपु.), २. ऊरुः (नपु.), ३. पर्वाष्ठीवद् (नपु.)।

सक्थि क्लीवे पुमानूरुः।

जानूपरिभागस्य द्वे नामनी– १.सक्थि (नपु.), २. ऊरुः(पु.)।

गुदं त्वपानं पायुर्ना।

मलनिर्गममार्गस्य त्रीणि नामानि– १. गुदम् (नपु.), २. अपानम् (नपु.), ३. पायुः(नपु.),।

कटो ना श्रोणिफलकम्।

कटी**फलकस्य द्वे नामनी–** १. कटी (पु.), २. श्रोणिफलकम् (नपु.)।

कटिः श्रोणिः ककुद्मती।

कटेः त्रीणि नामानि– १. कटिः (पु.), २. श्रोणिः (पु.), ३. ककुद्मती (स्त्री.)।।

पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः।

स्त्रीकट्याः पश्चाद्भागस्य एकं नाम– १. नितम्बः(पु.)।

पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दम्।

उदरस्य पञ्च नामानि-

१.पिचण्डः (पु.), २. कुक्षी (पु.), ३. जठरम् (नपु.), ४. उदरम् (नपु.), ५.तुन्दम् (नपु.)।

स्तनौ कुचौ चूचुकं तु कुचाग्रं स्यात् न ना क्रोडं भुजान्तरम्।

वक्षोजस्य द्वे नामनी- १. स्तनौ (पु.), २. कुचौ (पु.)।

स्तनाग्रस्य द्वे नामनी- १. चूचुकम् (नपु.) २. कुचाग्रम् (नपु.)।

अङ्कस्य द्वे नामनी- १. क्रोडम् (नपु.), २. भुजान्तरम् (नपु.)।

उरो वत्सं च वक्षश्च पृष्ठं तु चरमं तनोः।

उरसः त्रीणि नामानि- १. उरः (नपु.), **२. वत्सम्** (नपु.)**, ३. वक्षः**(नपु.)।

देहपश्चाद्भागस्य एकं नाम- १. पृष्ठम् (नपु.)।

स्कन्धो भुजशिरोंऽसोऽस्त्री।

स्कन्धस्य त्रीणि नामानि- १. स्कन्धः (पु.), २. भुजशिरः (नपु.), ३. अंसः(नपु.)।

बाहुमूले उभे कक्षौ।

कक्षस्य द्वे नामनी- १. बाहुमूले (नपु.), २. कक्षौ (पु.)।

मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री।

देहमध्यस्य त्रीणि नामानि- १. मध्यमम् (नपु.), २. अवलग्नम् (नपु.), ३. मध्यम् (नपु.)।

भुजबाहू प्रवेष्ठो दोः स्यात्, कफोणिस्तु कूर्परः।

भुजस्य चत्वारि नामानि- १.भुजः(पु.), २.बाहुः (पु.),३. प्रवेष्ठः (पु.),४. दोः(पु.)।

कूणी(भुजमध्य)**इत्यस्य द्वे नामनी-** १. कफोणिः(पु.),२. कूर्परः (पु.)।

अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्, प्रकोष्ठस्तस्य चास्यधः।

कूर्परोपरिभागस्य एकं नाम- १. प्रगण्डः (पु.)।

कफोणेरधो मणिबन्धपर्यन्त-भागस्य एकं नाम- १. प्रकोष्ठः (पु.)।

मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः।

करबहिर्भागस्य एकं नाम- १. करभः (पु.)।

पञ्च शाखः शयः पाणिः, तर्जनी स्यात्प्रदेशनी।

हस्तस्य त्रीणि नामानि- १. पञ्च शाखः(पु.), २. शयः (पु.), ३. पाणिः(पु.)।

अङ्गुष्ठसमीपाङ्गुल्याः द्वे नामनी- १. तर्जनी (स्त्री.),२. प्रदेशनी (स्त्री.)।

अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः।

अङ्गुलीमात्रस्य द्वे नामनी- १. अङ्गुली (स्त्री.), २. करशाखा (स्त्री.)।

पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी, मध्यमानामिका चापिकनिष्ठा चेति ताः क्रमात्।

अङ्गुलीनां क्रमेण एकैकं नाम- १. अङ्गुष्ठः (पु.),२. (तर्जनी)स्त्री., ३. मध्यमा(स्त्री.),४. अनामिका (स्त्री.), ५. कनिष्ठा(स्त्री.)।

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम्।

नखस्य चत्वारि नामानि- १. पुनर्भवः(पु.), २. कररुहः(पु.), ३. नखः(पु.), ४.नखरः(पु.)।

कण्ठो गलः।

ग्रीवाग्रभागस्य द्वे नामनी– १. कण्ठः (पु.),२.गलः(पु.)।

वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम्।

मुखविलस्य सप्त नामानि–

१. वक्त्रम् (नपु.),२. आस्यम् (नपु.),३. वदनम् (नपु.),४. तुण्डम् (नपु.),५. आननम् (नपु.),६. लपनम् (नपु.),७.मुखम्(नपु.)।

क्लीवे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका।

नासिकायाः पञ्च नामानि–

१. घ्राणम् (नपु.), २. गन्धवहा (स्त्री.), ३. घोणा (स्त्री.),४. नासा (स्त्री.), ५.नासिका (स्त्री.)।

ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदो दशनवाससी।

उत्तराधरोष्ठमात्रस्य चत्वारि नामानि–

१. ओष्ठः (पु.), २. अधरः (पु.), ३. रदनच्छदः (पु.),४. दशनवाससी (पु.),।

अधस्ताच्चिवुकम्।

ओष्ठोधोभागस्य एकं नाम– १. चिवुकम्(नपु.), ।

गण्डौ कपोलौ।

कपोलस्य द्वे नामनी– १. गण्डः (पु.), २. कपोलः(पु.)।

तत्परो हनुः।

कपोलाधोभागस्य एकं नाम– १. हनुः(पु.)।

रदना दशना दन्ताः रदाः।

दन्तस्य चत्वारि नामानि– १. रदनः (पु.), २. दशनः (पु.), ३. दन्तः (पु.), ४. रदः(पु.), ।

तालु तु काकुदम्।

तालुनः द्वे नामनी– १. तालु (नपु.), २. काकुदम् (नपु.)।

रसज्ञा रसना जिह्वा।

जिह्वायाः त्रीणि नामानि– १. रसज्ञा (स्त्री.), २. रसना(स्त्री.), ३.जिह्वा(स्त्री.),।

प्रान्तोष्ठस्य सृक्कणी।

ओष्ठप्रान्तयोः एकं नाम– १. सृक्कणी (स्त्री.)।

ललाटमलिकं गोधिः।

भालस्य त्रीणि नामानि– १. ललाटम् (नपु.), २. अलिकम् (नपु.),३. गोधिः(पु.)।

ऊर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ, कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यम्।

नेत्रोपरिभागस्य रोमराजेः एकं नाम– १. भ्रुवः(पु.)।

नासोपरिभ्रूद्वयमध्यस्य एकं नाम– १. कूर्चम् (नपु.)।

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी दृग्दृष्टी च।

नेत्रस्य अष्टौ नामानि– १. लोचनम् (नपु.),२. नयनम् (नपु.), ३. नेत्रम् (नपु.),४. ईक्षणम् (नपु.), ५. चक्षुः(नपु.), ६. अक्षि(नपु.), ७. दृक्(स्त्री.), ८. दृष्टिः(स्त्री.)।

अम्बु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च।

नेत्रोदकस्य पञ्च नामानि–

१. अम्बु (नपु.), २. नेत्राम्बु (नपु.), ३.रोदनम् (नपु.), ४.अस्रम् (नपु.), ५. अश्रु (नपु.)।

अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ।

नेत्रप्रान्तयोः एकं नाम–१. अपाङ्गः(पु.)।

कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने।

कटाक्षस्य द्वे नामनी– १. कटाक्षः(पु.) २. अपाङ्गदर्शनम् (नपु.)।

कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः।

कर्णस्य षण्णामानि–

१. कर्णः (पु.), २. शब्दग्रहः (पु.), ३. श्रोत्रम् (नपु.), ४. श्रुतिः(स्त्री.) ५. श्रवणम् (नपु.), ६. श्रवः (नपु.)।

उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्धा ना मस्तकेऽस्त्रियाम्।

मस्तकस्य पञ्च नामानि– १. उत्तमाङ्गम् (नपु.), २. शिरः (नपु.), ३. शीर्षम् (नपु.), ४. मूर्धा (नपु.), ५. मस्तकः (पु.)।

चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः।

केशस्य षण्णामानि–

१. चिकुरः (पु.), २. कुन्तलः (पु.), ३. बालः (पु.), ४. कचः (पु.), ५. केशः (पु.), ६. शिरोरुहः(पु.)।

तद् वृन्दे कैशिकं कैश्यम्।

केशवृन्दस्य द्वे नामनी– १. कैशिकम् (नपु.), २. कैश्यम् (नपु.)।

अलकाश्चूर्णकुन्तलाः।

कुटिलकेशानां द्वे नामनी– १. अलकाः (स्त्री.), २.चूर्णकुन्तलाः (पु.)।

ते ललाटे भ्रमरकाः।

ललाटगतकेशानाम् एकं नाम– १. भ्रमरकः (पु.)।

काकपक्षः शिखण्डिकः।

बालानां शिखायाः द्वे नामनी– १.काकपक्षः (पु.), २. शिखण्डिकः(पु.)।

कवरी केशवेशः।

केशबन्धरचनायाः द्वे नामनी– १. कवरी (पु.), २. केशवेशः(पु.)।

अथ धम्मिल्लः संयताः केशाः।

चूडा इत्यस्य एकं नाम– १. धमिल्लः (पु.)।

शिखा चूडा केशपाशी।

शिरोमध्यस्थचूडायाः(चोटी) **त्रीणि नामानि**– १. शिखा (स्त्री.),२. चूडा(स्त्री.),३. केशपाशी(स्त्री.)।

व्रतिनस्तु जटा सटा।

व्रतिनः शिखायाः द्वे नामनी– १. जटा (स्त्री.), २. सटा(स्त्री.)।

वेणीप्रवेणी।

प्रोषितभर्तृकादिधार्यकेशरचनाविशेषस्य द्वे नामनी– १. वेणी (स्त्री.), २. प्रवेणी (स्त्री.)।

पाशः पक्षः हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे।

कलापार्थस्य त्रीणि नामानि– १. पाशः (पु.), २. पक्षः(पु.), ३. हस्तः(पु.)।

तनूरुहं रोम लोम।

रोम्णः त्रीणि नामानि– १. तनूरुहम् (नपु.), २. रोम (नपु.), ३. लोम(नपु.)।

तद् वृद्धौ श्मश्रु पुंमुखे।

पुरुषस्य दाढिकायाः एकं नाम– १. श्मश्रु (नपु.)।

आकल्पवेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम्।

अलङ्काररचनादिकृतशोभायाः पञ्च नामानि–

१. आकल्पः (पु.), २. वेषः (पु.), ३. नेपथ्यम् (नपु.), ४. प्रतिकर्म (नपु.), ५. प्रसाधनम् (नपु.)।

अलङ्कर्तालङ्करिष्णुश्च।

अलङ्करणशीलस्य द्वे नामानि– १. अलङ्कर्ता (पु.), २. अलङ्करिष्णुः(पु.)।

मण्डितः प्रसाधितोऽलङ्कृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः।

भूषितस्य पञ्च नामानि–

१. मण्डितः (पु.), २. प्रसाधितः(पु.), ३. अलङ्कृतः(पु.), ४. भूषितः(पु.), ५.परिष्कृतः(पु.)।

विभ्राड् भ्राजिष्णुरोचिष्णू

अलङ्कारादिना शोभमानस्य त्रीणि नामानि–

१. विभ्राड् (पु.), २. भ्राजिष्णुः (पु.), ३. रोचिष्णुः (पु.)।

भूषा तु स्यादलंक्रिया।

भूषणक्रियायाः द्वे नामनी– १. भूषा (स्त्री.), २. अलंक्रिया (स्त्री.)।

अलङ्कारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणं मण्डनञ्च ।

भूषणानां नामानि पञ्च –

१.अलङ्कारः(पु.),२. आभरणम्(नपु.),३. परिष्कारः(पु.),४. विभूषणम् (नपु.),५.मण्डनम् (नपु.)।

अथ मुकुटं किरीटं पुंनपुंसकम्।

मुकुटस्य द्वे नामनी– १. मुकुटम् (नपु.),२. किरीटम् (नपु.)।

चूडामणिः शिरोरत्नम्।

शिरोमणेः द्वे नामनी– १. चूडामणिः(पु.), २. शिरोरत्नम् (नपु.)।

कर्णिका तालपत्रं स्यात्।

कर्णाभरणस्य द्वे नामनी– १. कर्णिका (स्त्री.), २. तालपत्रम् (नपु.)।

पत्त्रपाश्या ललाटिका।

ललाटाभरणस्य द्वे नामनी– १. पत्त्रपाश्या (स्त्री.), २. ललाटिका (स्त्री.)।

कुण्डलं कर्णवेष्टनम्।

कुण्डल द्वे नामनी– १. कुण्डलम् (नपु.), २. कर्णवेष्टनम् (नपु.)।

ग्रैवेयकं कण्ठभूषा।

कण्ठाभरणस्य द्वे नामनी– १. ग्रैवेयकम् (नपु.), २. कण्ठभूषा (स्त्री.)।

आवापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम्।

प्रकोष्ठाभरणस्य चत्वारि नामानि–

१. आवापकः (पु.), २. पारिहार्यः (पु.), ३. कटकः (पु.), ४. वलयः (पु.),।

केयूरमङ्गदं तुल्ये।

प्रगण्डभूषणस्य द्वे नामनी– १. केयूरम् (नपु.), २. अङ्गदम् (नपु.)।

अङ्गुलीयकमूर्मिका।

अङ्गुलीभूषणस्य द्वे नामनी- १. अङ्गुलीयकम् (नपु.), २. ऊर्मिका (स्त्री.)।

स्त्रीकटयां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा क्लीवे सारसनं च।

स्त्रीकटिभूषणस्य पञ्च नामानि-

१. मेखला (स्त्री.), २. काञ्ची (स्त्री.), ३. सप्तकी (स्त्री.),४. रशना (स्त्री.), ५. सारसनम् (नपु.)

कङ्कणं करभूषणम्।

मणिबन्धस्य द्वे नामनी- १. कङ्कणम् (नपु.), २. करभूषणम्, (नपु.)।

पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम्। हंसकः पादकटकः।

नूपुरस्य षण्णामानि-

१. पादाङ्गदम् (नपु.), २. तुलाकोटिः (पु.), ३. मञ्जीरः(पु.), ४. नूपुरः (पु.) ५. हंसकः (पु.) ६. पादकटकः(पु.)।

किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका।

क्षुद्रघण्टिकायाः(घुघुरा)**द्वे नामनी-** १. किङ्किणी (स्त्री.), २. क्षुद्रघण्टिका (स्त्री.)।

वस्त्रमाच्छादनं वासश्चेलं वसनमंशुकम्।

वस्त्रस्य षण्णामानि-

१. वस्त्रम् (नपु.), २. आच्छादनम् (नपु.), ३. वासः (पु.), ४. चेलम् (नपु.), ५. वसनम् (नपु.), ६. अंशुकम् (नपु.)।

सुचेलकः पटोऽस्त्री।

शोभनवस्त्रस्य द्वे नामानि- १.सुचेलकः (पु.), २. पटः(पु.)।

निचोलः प्रच्छदपटः।

डोळिकाद्यावरणपटस्य(बुरका) **द्वे नामनि-** १. निचोलः(पु.), २. प्रच्छदपटः(पु.)।

समौ रल्लभकम्बलौ।

कम्बलस्य द्वे नामनी- १. रल्लभः (पु.), २. कम्बलः (पु.), / कम्बलम् (नपु.)।

अन्तरीयोपसंवयानपरिधानान्यधोंशुके।

परिधानवस्त्रस्य चत्वारि नामानि-

१. अन्तरीयः (पु.), २. उपसंवयानम् (नपु.), ३. परिधानम् (नपु.), ४. अधोंशुकम् (नपु.)।

द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा संव्यानमुत्तरीयं च।

उपरिवस्त्रस्य पञ्च नामानि-

१. प्रावारः (पु.), २. उत्तरासङ्गः (पु.), ३. बृहतिका (स्त्री.)४. संव्यानम् (नपु.), ५.उत्तरीयम् (नपु.)।

चोलकूर्पासकौ स्त्रियाः।

स्त्रीणां कञ्चुलिशाख्यस्य द्वे नामनी- १. चोलः(पु.), २. कूर्पासकः(पु.)।

नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे।

प्रावरणस्य एकं नाम- १.नीशारः (पु.)। शैत्यवस्त्रम्।

अर्धोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमंशुकम्।

लहङ्गा इत्यस्य एकं नाम- १. चण्डातकम्(नपु.)।

दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि।

वस्त्रगृहस्य एकं नाम– १. दूष्यम् (नपु.)।

प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च।

व्यवधानपट्याः (कनात) **त्रीणि नामानि**–

१.प्रतिसीरा (स्त्री.), २. जवनिका (स्त्री.), ३. तिरस्करिणी(स्त्री.)।

परिकर्माङ्गसंस्कारः।

शरीरशोभाधायककर्मणः द्वे नामनी– १. परिकर्म (नपु.)२. अङ्गसंस्कार:(पु.)।

स्यान्मार्ष्टिर्माजना मृजा।

प्रोछ नादिनाङ्गनिर्मलीकरणस्य त्रीणि नामानि– १. मार्ष्टि:(स्त्री.) २. र्माजना (स्त्री.)३. मृजा(स्त्री.)।

उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे।

सुगन्धद्रव्येणाङ्गनिर्मलीकरणस्य द्वे नामनी– १. उद्वर्तनम् (नपु.), २. उत्सादनम् (नपु.)।

आप्लाव आप्लव स्नानम्।

स्नानस्य त्रीणि नामानि– १. आप्लाव: (पु.), २. आप्लव: (पु.), ३. स्नानम् (नपु.)।

चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासकः।

चन्दनादिना देहविलेपनस्य त्रीणि नामानि– १. चर्चा (स्त्री.),२. चार्चिक्यम् (नपु.),३. स्थासक:(पु.)।

तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम्। द्वितीयं च तुरीयं च न स्यात्।

ललाटकृततिलकस्य चत्वारि नामानि–

१.तमालपत्रम् (नपु.), २. तिलकम् (नपु.),३. चित्रकम् (नपु.), ४. विशेषकम्(नपु.)।

अत्र द्वितीयं तिलकम्, चतुर्थकं विशेषकं च स्त्रियां न भवतः।

अथ कुङ्कुमम्। काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं वाह्लीकपीतनम्।

रक्तसंकोचपिशुनं धीरलोहितचन्छनम्।।

कङ्कुमस्य एकादश नामानि–

१. कुङ्कुमम् (नपु.),२. काश्मीरजन्मम् (नपु.), ३. अग्निशिखम् (नपु.),४.वरम् (नपु.),५.वाह्लीक म् (नपु.), ६.पीतनम् (नपु.), ७. रक्तम् (नपु.), ८. संकोचम् (नपु.), ९. पिशुनम् (नपु.), १०. धीर: (पु.),११. लोहितम् (नपु.)।

प्रोछ नादिनाङ्गनिर्मलीकरणस्य त्रीणि नामानि– १. मार्ष्टि:(स्त्री.) २. र्माजना (स्त्री.)३. मृजा(स्त्री.)।

उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे।

राक्षा लाक्षा जतु क्लीवे यावोऽलक्तो द्रुमादयः।

लाक्षाः (महावर) **इत्यस्य षण्णामानि**– १. राक्षा (स्त्री.), २. लाक्षा (स्त्री.), ३. जतु (नपु.) ४. याव: (नपु.)५. अलक्त:(नपु.) ६. द्रुम:(नपु.)।

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञम्।

लवङ्गस्य त्रीणि नामानि–

१. लवङ्गम् (नपु.), २. देवकुसुमम् (नपु.), ३. श्रीसंज्ञम् (नपु.)।

अथ जायकं कालीयकं च कालानुसार्यं च।

सुगन्धद्रव्यभेदस्य त्रीणि नामानि–

१. जायकम् (नपु.), २. कालीयकम् (नपु.), ३.कालानुसार्यम् (नपु.)।

यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि बहुरूपोऽपि।

रालस्य (सर्वरस) **पञ्च नामानि**–

१. यक्षधूप: (पु.),२. सर्जरस: (पु.),३.राल: (पु.), ४. सर्वरस: (पु.), ५. बहुरूप:(पु.),।

मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी च।

कस्तूर्या त्रीणि नामानि– १. मृगनाभिः (पु.), २. मृगमदः (पु.), ३. कस्तूरी (स्त्री.)।

अथ कर्पूरमस्त्रियाम्।

घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका।

कर्पूरस्य पञ्च नामानि–

१. कर्पूरम् (नपु.),२. घनसारः (पु.),३. चन्द्रसंज्ञः (पु.),४. सिताभ्रः(पु.),५.हिमवालुका(स्त्री.)।

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम्।

चन्दनस्य चत्वारि नामानि–

१. गन्धसारः (पु.), २. मलयजः (पु.), ३. भद्रश्रीः (पु.), ४. चन्दनः(पु.)।

तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम्। कुचन्दनञ्च।

रक्तचन्दनस्य पञ्च नामानि–

१.तिलपर्णी(स्त्री.),२.पत्राङ्गम्(नपु.),३.रञ्जनम्(नपु.),४. रक्तचन्दनम्(नपु.),५.कुचन्दनम्(नपु.)।

अथ जातीकोशजातीफले समे।

जातीफलस्य (जाईफल) **द्वे नामनी**– १. जातीकोशम् (नपु.), २. जातीफलम् (नपु.)।

उपधानं तूपवर्हः।

शिरोनिधानस्य द्वे नामनी– १.उपधानम् (नपु.), २. तूपवर्हः (पु.)।

मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्काः खट्वा समाः।

पर्यङ्कस्य चत्वारि नामानि–

१. मञ्चः (पु.),२. पर्यङ्कः(पु.), ३. पल्यङ्कः(पु.), ४. खट्वा(स्त्री.)।

गेन्दुकः कन्दुकः।

कन्दुकस्य (गेन्द) **द्वे नामनी**– १. गेन्दुकः (पु.), २. कन्दुकः(पु.)।

दीपः प्रदीपः।

दीपस्य द्वे नामनी– १. दीपः (पु.), २. प्रदीपः(पु.)।

पीठमासनम्।

आसनस्य द्वे नामनी– १.पीठम् (नपु.),२. आसनम् (नपु.)।

समुद्गकः संपुटकः।

संपुटस्य द्वे नामनी– १. समुद्गकः (पु.), २.संपुटकः (पु.)।

प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः।

पीकदानी इतिभाषायाम् इत्यस्य द्वे नामनी– १. प्रतिग्राहः (पु.), २.पतद्ग्रहः(पु.)।

प्रसाधनी कङ्कतिका।

केशमार्जन्याः(कङ्ही) **द्वे नामनी**– १. प्रसाधनी (स्त्री.), २. कङ्कतिका(स्त्री.)।

दर्पणे मुकुरादर्शौ।

दर्पणस्य त्रीणि नामनी– १. दर्पणः (पु.), २. मुकुरः (पु.),३. आदर्शः(पु.)।

व्यजनं तालवृन्तकम्।

व्यजनस्य द्वे नामानि– १.व्यजनम् (नपु.), २. तालवृन्तकम् (नपु.)।

–इति मनुष्यवर्गः–

वस्तुनिष्ठ-प्रश्नाः-

१. मनुष्यस्य नाम विद्यते-

१. प्रमदा, २. मनुजः ३. कन्या ४. स्नुषा ( )

२. पत्न्याः नामास्ति।

१. जाया २. जनी ३. कुमारी ४.चिरण्टी ( )

३. सख्याः पर्यायः विद्यते-

१. कुलटा २. आलिः ३. प्रज्ञा ४. वृद्धा ( )

४. एषु कः स्त्रीलिङ्गशब्दः?

१. वनिता २. कलत्रम् ३.मनुष्यः ४.दाराः ( )

५. आचार्यस्य पत्नी विद्यते।

१. आचार्याणी २. आचार्यानी ३. उपाध्यायी ४.आचार्या ( )

६. वेश्यायाः नाम विद्यते।

१. कान्ता २. प्रसूता ३. गणिका ४. दूती ( )

७. पितृष्वसुः पुत्रस्य नामास्ति।

१. पैतृष्वसेयः २. मातृष्वसेयः ३. कौलटेयः ४. वैमात्रेयः ( )

८.तातः इति नामास्ति।

१. पितृव्यस्य २. पितुः ३. सुतस्य ४. मातुलस्य ( )

९.भगिन्याः नाम विद्यते।

१. आत्मजा २. ननन्दा ३. स्वसा ४. नप्त्री ( )

१०. पति-पत्न्योः मातुः नाम विद्यते-

१. श्वसुरः २. श्वश्रूः ३. मातुली ४. प्रजावती ( )

११. मातुलस्य पत्नी-

१. मातुली २. प्रजावती ३. याता ४.स्वसा ( )

१२. पितुः भ्रातुः-

१. मातुलः २. स्यालः ३. पितृव्यः ४.भ्रातृजः ( )

१३. पितुः पिता-

१. मातामहः २. पितामहः ३. श्वशुरः ४. भ्रात्रीयः ( )

१४.मातुः पिता-

१. मातामहः २. पितामहः ३. श्वशुरः ४. भ्रात्रीयः ( )

१५. दुहितुः पत्युः नाम किम्?

१. जामाता २. भागिनेयः ३. पितृव्यः ४. मातुलः ( )

१६. पत्युः नाम विद्यते।

१.जारः २. देवरः ३. धवः ४. भ्रात्रीयः ( )

१७.वामनस्य नाम विद्यते-

१. पोगण्डः २. खर्वः ३. श्रोणः ४. नरः ( )

१८.गदः इति कस्य नाम–

१. रोगस्य २. औषधस्य ३. नासारोगस्य ४.काशरोगस्य ( )

१९. नखस्य नाम किम्?

१. कररुहः २. पञ्च शाखः ३. उरः ४. पाणिः ( )

२०.पुरुषस्य दाढिकायाः नाम विद्यते।

१. वीरकेशः २.श्मश्रु ३. केशः ४. प्रसाधनम् ( )

२१. योषित् इति पदस्य अर्थोऽस्ति।

१. वरवर्णिनी २. अङ्गना ३. स्त्री ४.कोपना ( )

२२. अर्थ-भेदः प्रदर्शनीयः–

(क) पत्नी–पुरन्ध्री

(ख)आचार्या–आचार्यानी

(ग)उपाध्याया–उपाध्यानी

(घ)अवीरा–विधवा

(ङ) वामा–रामा

(च)सहधर्मिणी–पतिव्रता

(छ)संचारिका–वयस्या

(ज)तनयः–अपत्यम्

(झ)ननन्दा–प्रजावती

(ञ)नप्त्री–पौत्री

(ट)भर्ता–जारः

(ठ)अनुजः–अग्रजः

(ड)कुणिः–पङ्गुः

(ढ)यक्ष्मा–कासः

(ण)प्रकोष्ठः–करभः

(त)कपोलः–हनुः

(थ)श्रवः–चिकुरः

(द)ग्रैवेयकं–कुण्डलम्

(ध)ऊर्मिका–मेखला

(न)भ्रुवः–चक्षुः

२३. अतिलघूत्तरात्मक-प्रश्नाः–

(क)स्त्रियः कति नामानि?

(ख)मनुष्यस्य कति नामानि?

(ग)सख्याः कति नामानि?

(घ) बुद्धिमतीस्त्रियः नामद्वयं लिखत।

(ङ)शूद्रजातीयायाः स्त्रियः एकं नाम किम्?

(च) आचार्यस्य स्त्रियः नाम किम्?
(छ) वैश्यपत्न्याः नाम किम्?
(ज) वेश्यायाः कति नामानि?

२४. निबन्धात्मक-प्रश्नाः-

(क) मनुष्यस्य नामानि कति? तेषु पञ्च नामानि लेख्यानि।
(ख) स्त्रियः कति नामानि? तेषु सप्त नामानि लिखत।
(ग) पतिसेवातत्परायाः स्त्रियः नामानि लेखनीयानि।
(घ) स्वैरिण्याः स्त्रियः नामानि लिखत।
(ङ) पितुः नामानि लेख्यानि।
(च) भ्रातुः चत्वारि नामानि कानि?
(छ) मातापित्रोः त्रीणि नामानि लिखत।
(ज) पति-पत्न्योः चत्वारि नामानि लेख्यानि।
(झ) बृद्धस्य पञ्च नामानि लिखत।
(ञ) कनिष्ठभ्रातुः पञ्च नामानि लिखत।
(ट) रोगस्य सप्त नामानि लेख्यानि।
(ठ) रक्तस्य पञ्च नामानि लिखत।
(ड) देहस्य कति नामानि? तेषु सप्त नामानि लिखत।
(ढ) अङ्गुलीनां नामानि लेखनीयानि।
(ण) नेत्रस्य कति नामानि? तेषु सप्त नामानि लिखत।
(त) नेत्रोदकस्य पञ्च नामानि लिखत।
(थ) भूषितस्य पञ्च नामानि लिखत।
(द) नूपुरस्य षण्णामानि लिखत।
(ध) वस्त्रस्य षण्णामानि लिखत।
(न) परिधानवस्त्रस्य चत्वारि नामानि लिखत।